विशेषज्ञों के अनुसार इस वस्त्र पर ऐसी उत्तम कोई पुस्तक आज तक प्रकाशित नहीं हुई ।

Tailor of India

हिन्दुस्तान का दर्ज़ी

(रजिस्टर्ड)

आठ भागों में

तीसरा भाग

पाजामा

काटने की साइन्टिफिक (SCIENTIFIC) शुद्ध रीति

स्त्र परिवार, पाठशालाओं, दर्ज़ी-पेशा और इन्डस्ट्रियल स्कूलों के वास्ते ।

नोट—जिस पुस्तक में कटाई विद्या के नियम साइन्स, ज्यामेट्री व साइन्स अनाटमी द्वारा शुद्ध प्रमाण देकर, न लिखे हुए हों, ऐसी पुस्तक बिना मूल्य भी खरीद न करें; अन्यथा अवश्य ही पछताना पड़ेगा ।

लेखक व प्रकाशक

देवीचन्द, टेलरिंग एक्सपर्ट,

इण्डियन टेलरिंग कालेज, होशियारपुर (पंजाब) ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ॥)
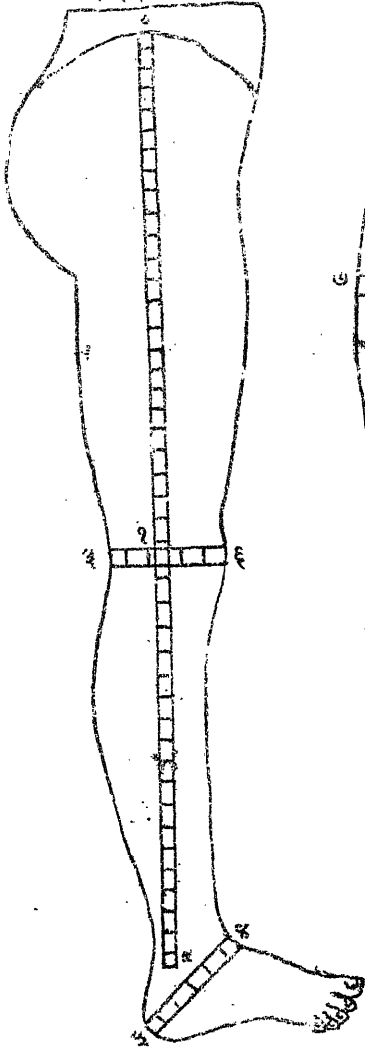
चित्र सं० १
चित्र सं० २
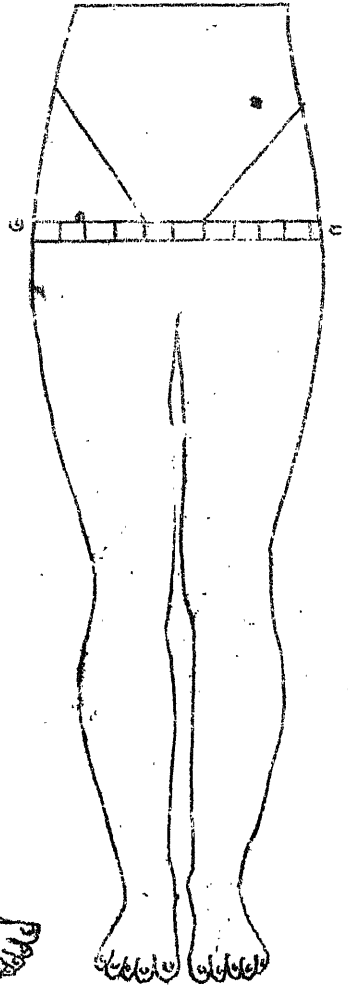
पाजामे का नाप लेने की रीति (देखो चित्र नं० १ व २)

नं ० से नं १ तक ऊपर से लेकर घुटने तक लात की लम्बाई
नं ० से नं २ तक लात की पूरी लम्बाई यानी पाजामे की लम्बाई का नाप
नं ३ से ४ तक एड़ी की गोलाई का नाप
नं ५ से ६ तक घुटने की गोलाई का नाप और चित्र नं २ में न ७ से नं ८ तक सीट (Seat) की गोलाई का नाप नं ५ से जैसे गज अर्थात् इञ्चटेप प्रकट करता है।

नोट—सीट (Seat) शरीर का वह भाग है जो कि टांगो और कमर के बीच शरीर के और सब भागों से गोलाई मे अधिक है।

घुटने पर सीन वाला पाजामा काटने की रीति (देखो चित्र नं ३)

नाप—मानलो लात की लम्बाई १७ गिरह अथवा ३८ ई०
सीट की गोलाई १६ गिरह या ३६ ई०
पाजामे की मोहरी ४ गिरह या ६ ई०
कपड़े का अर्ज १२ गिरह या २७ ई०

न ० से न १ तक और न ६ से न ९ तक लात की लम्बाई जमा नेफे और मोहरी के लिए २ गिरह बराबर १९ गिरह या ४३ इंच।

न १ से न २ तक और ६ से ५ तक मोहरी की चौड़ाई नियमानुसार ४ गिरह या ९ इंच। न २ से न ३ और नं ५ से नं ८ तक भुजा की लम्बाई सीट के नाप का छटा भाग जमा लात की लम्बाई का पांचवां भाग जमा नेफे

के लिए १ गिरह अर्थात् आसन की लम्बाई की कुल संख्या ७ गिरह बराबर १६ ई०

नं ० से नं ५ तक और नं ६ से नं २ तक सीट को गोलाई का आधा भाग ८ गिरह अर्थात् १८ ई०

नं ४ से न ३ तक और नं ७ से नं ८ तक मोहरी की गोलाई के बराबर ४ गिरह या ९ ई० । नं ३ से न ११ तक रेखा नं ३ व ८ का आधा भाग

नं ११ से नं १० तक सीट की गोलाई का सोलहवां भाग बराबर १ गिरह या सवा दो ई० फिर रेखा नं २, ३, १०, ८, ५ के स्थान से काट कर पाजामा तैयार करें और काले रँग के स्थान का टुकड़ा इस रीति से एक अधिक है उसे काट कर बाहर कर दें और नं ११ के स्थान का टुकड़ा पाजामे के बीच में लगावें जिसे चित्र नं ४ प्रकट करती है ।

देवीचन्द टेलरिंग अक्सपर्ट होशियारपुर (पंजाब)

गज़ और इंचटेप

सवा दो ई०	२¼ ई०	का	१ गि०	सवाबीस	२०¼ ,,	,,	९ ,,
साड़ेचार	४½ ई०	,,	२ ,,	साड़े बाईस	२२½ ,;	,,	१० ,,
पौने सात	६¾ ई०	,,	३ ,,	पौने पच्चीस	२४¾ ,,	,,	११ ,,
	९ ई०	,,	४ ,,		२७ ,,	,,	१२ ,,
सवा ग्यारह	११¼ ,,	,,	५ ,,	सवा उनतीस	२९¼ ,,	,,	१३ ,,
साड़े तेरह	१३½ ,,	,,	६ ,,	साड़े इकतीस	३१½ ,,	,,	१४ ,,
पौने सोलह	१५¾ ,,	,,	७ ,,	पौने चौतीस	३३¾ ,,	,,	१५ ,,
	१८ ,,	,,	८ ,,		३६ ,,	,,	१६ ,,

चित्र सं० ३
स्केल

५

नेफा

नेफा

११

४

१०

चित्र सं० ४

मोहरी

मोहरी

सुकेएर (   )

यह एक लकड़ी या लोहे का गज होता है। जिसे काम में लाने से विद्यार्थी को ९० डिगरी का ऐङ्गल और दा २ सीधी रेखायें लम्बाई और चौड़ाई में ठीक मिलती हैं। और इञ्च के भिन्न भागों के निशान लगे हुए हैं जिन से प्रत्येक फैशन का वस्त्र (लिबास) काटते हैं विद्यार्थी को बड़ी सुगमता रहती है। और यह सुकेएर हमारी दूकान से बहुत अच्छे व सस्ते मूल्य पर मिल सकते हैं जिस विद्यार्थी को जरूरत हो शीघ्र मंगा कर अपनी प्रेक्टिस के काम में लावे। इस के अलावा कैंचियां इञ्च-टेप निशान लगाने वाली टिकिया के बक्स भी यहां से मिल सकते हैं।

चित्र नं० ३ के पाजामे को कपड़ा लगाने की रीति

नियम—लात की लम्बाई में २ गिरह जोड़ कर फिर दो के साथ गुणा करके जो उत्तर मिले उतना कपड़ा लगेगा।

मानलो लात की लम्बाई १७ गिरह (१७+२)×२ बराबर ३८ गिरह अथवा २ गज ६ गिरह कपड़ा लगेगा आगे इसी तरह।

यह नियम तब काम में लावे जब कपड़े का अर्ज सीट के नाप से करीब करीब पौने भाग के बराबर हो और मोहरी की चौड़ाई का नाप सीट के चौथे ४ भाग के बराबर हो जैसे चित्र नं ३ में कई नाप उदाहरणार्थ लिखे हैं।

चित्र नं ३

सीट	१२	१६	२०	१८	१४	गिरह
अर्ज	१०	१२	१५	१४	११	,,
मोहरी	४		५	५	३½	,,

नीचे लिखे नापों पर कुछ पाजामें कागज के काट कर तैयार करें और साथ ही यह बतलावें कि उनको किस तरतीब से ओर कितना २ कपड़ा लगेगा।

लम्बाई	सीट	मोहरी	कपड़े का अर्ज	गिरह
१६	१७	४	१३	,,
१८	१६	४	१२	,,
१७	१५	४	१२	,,

पाजामा काटने की रीति (देखो चित्र नं ५)

नाप—मान लो लात की लम्बाई १७ गिरह अर्थात् सवा ३८¼ ई० सीट की गोलाई १६ गिरह या ३६ इ०

मोहरी नियमानुसार साड़े तीन ३½ गिरह उर्थात् ८ इ०

कपड़े का अर्ज १२ गिरह अर्थात् २७ इ०।

नोट—चित्र नं ५ में रेखा ० से १ तक कपड़े के अर्ज को दूहरा करके दिखाई गई है।

नं ० से नं १ तक लात की लम्बाई जमा नेफे और मोहरी के लिये दो गिरह अर्थात कुल संख्या १९ गिरह बराबर पौने तैंतालीस ४२¾ इ०, नं ० से न ४ तक लात की लम्बाई की दूनी

चित्र सं० ४
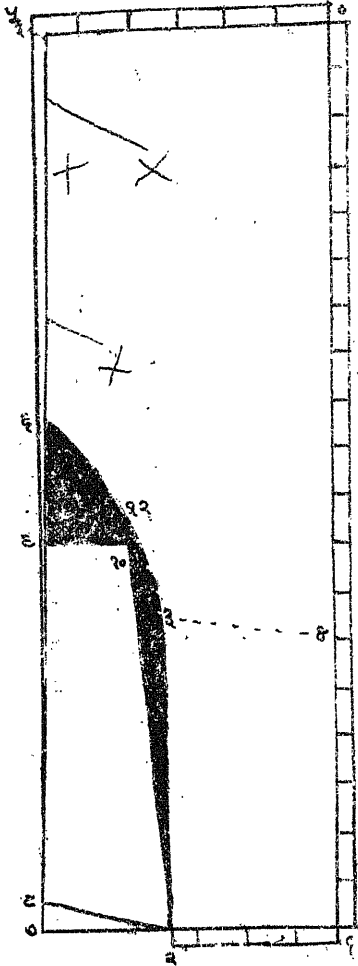
समालोचना

एडीटर सहिब अखबार प्रताप, लाहौर

दर्ज़ी कला पर पांच नई पुस्तकें महाशय देवी चन्द बोहन ने भेजी हैं। इनके नाम " कमीज़, वास्कट, कुर्ता, सिलवार, और पाजामा हैं। इनका विषय इनके नाम से ही प्रकट है। लेखक ने इन वस्तुओं की सिलाई कटाई के नियम बहुत समझा कर लिखे हैं। चित्रों और खाकों के देने से पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है। दर्ज़ी विद्या से अपरिचित लड़के और लड़कियां इन कामों को गुरू के न होते हुए भी सीख सकती हैं। जहां तक हमें मालूम है, ऐसी अच्छी पुस्तकें आज तक नहीं बनीं। देश में शिल्प कला की उन्नति के लिए ऐसी पुस्तकों का बनना अति प्रसन्नता का कारण है।

संख्या का तिहाई भाग जमा नेफे के लिये एक गिरह अर्थात कुल संख्या १२ गिरह बराबर २७ इ०। नं १ से नं २ तक नियमानुसार ३½ साड़े तीन गिरह अर्थात ८ इ०। नं ४ से न ३ तक नियमानुसार मोहरी के नाप के बराबर साड़े तीन ३½ गिरह अर्थात ८ इ०। यदि गाहक घुटने की जगह से पाजामे की चौड़ाई को अधिक इच्छा रखता हो तो इस संख्या को ८ इ० की जगह ९ इ० नियत करें। नं ० से नं ५ तक और नं १ से नं ७ तक दूहरा किया हुआ कपड़े का अर्ज ६ गिरह बराबर साड़े तेरह १३½ इ० नं ५ से नं ६ तक भुजा की लम्बाई सीट का छटा भाग जमा लात की लम्बाई का पांचवां भाग जमा २ गिरह बराबर ८ गिरह अर्थात १८ इ०। नं ७ से ८ तक साधारण नियम १ गिरह

नं ८ से ९ तक आसन को लम्बाई सीट के नाप का छठा भाग जमा लात की लम्बाई का पांचवां भाग जमा नेफे के लिये एक गिरह अर्थात कुल संख्या ७ गिरह बराबर १६ इ०

नं ९ से न १० तक सीट का दसवाँ भाग करीब करीब डेढ़ गिरह न २ से १० तक लम्बाई में सीधी रेखा नं ५, ६ के बराबर ८ गिरह नं ३ से ११ तक रेखा नं ३ व ६ का आधो ½ भाग। नं ११ से १२ तक आधा गिरह अर्थात १ इ०।

फिर नं २, ३; १२, ६ के स्थान से और नं ९, १०, २, ८ के स्थान से काट कर पाजामा तैयार करें जैसे चित्र नं ५ से प्रकट है।

नोट—इस चित्र में काले रंग के स्थान को टुकड़ा एक

अधिक है उसे काट कर बाहर कर दें और इस पाजामें को कपड़ा लगाने की रीति वही है जो चित्र नं ३ में वर्णन कर चुके हैं।

नीचे लिखे नापों पर कागज के कुछ पाजामे काट कर तैयार करें और साथ ही यह बतलायें कि इन पाजामों को इस तरतीब से कितना २ कपड़ा लगेगा।

लम्बाई	१६	१८	१७	गिरह
सीट	१७	१६	१५	,,
मोहरी	४	४	४	,,
कपड़े का अर्ज	१३	१२	१२	,,

इस पाजामे को सीने की रीति (देखो चित्र नं ६)

रेखा नं ५, ६ के साथ आसन के टुकड़े की रेखा नं १० व २ को जोड़ कर पाजामा तैयार करें। जैसे चित्र नं ६ से प्रकट है।

टेंगली काट का पाजामा काटने की रीति (देखो चित्र नं७)

मान लो लात की लम्बाई १७ गिरह सीट की गोलाई १६ गिरह मोहरी रिवाजानुसार ४ गिरह कपड़े का अर्ज १६ गिरह नं ० से न १ तक लात की लम्बाई का नाप जमा नेफे और मोहरी के लिए दो गिरह कुल संख्या १९ गिरह। नं १ से २ तक कपड़े के अर्ज का आधा भाग अर्थात ८ गिरह। नं २ से ३ तक लात की लम्बाई की दूनी संख्या का पांचवां भाग बराबर ७ गिरह। नं ० से नं ५ तक कपड़े के अर्ज या सीट के नाप
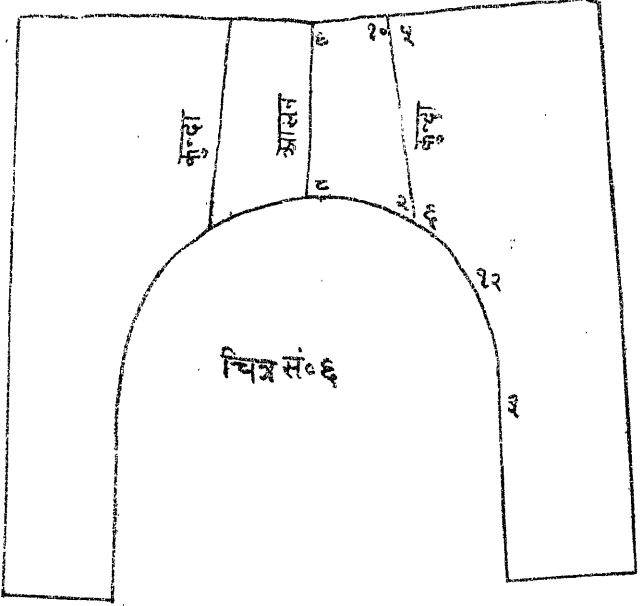
चित्र सं० ६

चित्र सं०७
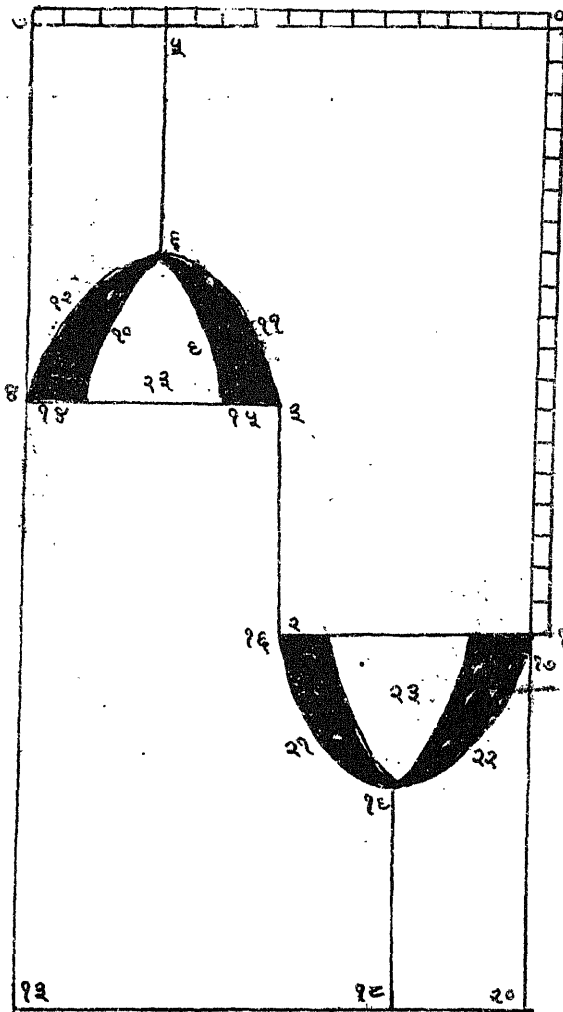
का पौन भाग बराबर १२ गिरह अर्थात २७ इ० । नं ५ से ७ तक कपड़े के अर्ज या सीट के नाप का चौथा भाग बराबर ४ गिरह । अर्थात ९ इ० न ५ से ६ तक आसन की लम्बाई सीट के नाप का छटा भाग जमा लात की लम्बाई का पांचवां भाग जमा नेफे के लिये एक गिरह अर्थात कुल संख्या ७ गिरह नं ७ से ४ तक पाजामे को पूरी लम्बाई नफी रेखा नं २, ३ की लम्बाई का नाप बराबर १२ गिरह ।

नं ३ से ९ तक और ११ से १० तक रेखा नं ३, ६ का आधा भाग न ९ से ११ तक और १० से १२ तक साधारण नियम सवा इ० या आधा गिरह । फिर नं १, २, ३, ११, ६, ४ के स्थान से काट कर पाजामे की एक लात को तैयार करें ।

फिर बाकी पाजामें के टुकड़े पर इसे तैयार किये हुए पाजामे को लात को इस क्रम से रख कर तैयार करें कि बिन्दु नं ० नं १३ पर, नं १ नं १४ पर नं २ नं १५ पर, नं ३ नं १६ पर नं ४ नं १७ पर नं ७ नं २० पर नं ६ नं १९ - नं ११ नं २१ पर नं १२ नं २२ पर आजावे ।

फिर नं ५, ६, १८, १९ के स्थान से काट कर नं २३ के टुकड़े जैसी शक्ल बना कर आसन के बीच में लगावें जैसे कि शक्ल नं ४ में हम पहिले बयान कर चुके हैं।

इस पाजामे के सीने की रीति

विन्दु नं ७, १३ के स्थान को इकट्ठा करके नं ७, ४ की जगह पर सीन डाल दें फिर नं २०, को इकट्ठा करके नं १७, २० के स्थान पर सीन डाल दें, फिर आसन के बीच से काट

कर नं २३ की जगह का टुकड़ा आसन के बीच में लगावें, जैसे चित्र नं ८ से प्रकट है।

इस पाजामे को कपड़ा लगाने की रीति

नियम—लात की लम्बाई में २ गिरह जोड़ कर फिर २ के साथ गुणा करके फिर रेखा नं १, ३ का नाप जो घुटने से मोहरी तक पाजामे की लम्बाई है इसे कम करके जो उत्तर मिले उतना कपड़ा लगेगा।

उदाहरण—मानलो लात की लम्बाई १७ गिरह, घुटने से मोहरी तक का नाप ७ गिरह। (१७ + २) × २ खण्डत ७ बराबर ३१ गिरह कपड़ा लगेगा—आगे इसी तरह।

नोट—यह नियम तब काम में लावें जब कपड़े का अर्ज सीट के नाप के बराबर और पाजामे की मोहरी का नाप कपड़े के अर्ज के चौथाई भाग के बराबर हो जैसे चित्र नं ७ में उदाहरणार्थ कुछ नाप लिखे हैं।

सीट	१३	१४	१५	१६	१६½	१७	गिरह
मोहरी	३	३¼	३½	४	४	४¼	,,
कपड़ेका अर्ज	१३	१४	१५	१६	१७	१८	,,

नीचे लिखे नापों पर कुछ पाजामें कागज के काट कर तैयार करें और साथ ही यह बतायें कि इस तरतीब से इन को कितना २ कपड़ा लगेगा।

लम्बाई	२०	१८	१६	गिरह
सीट	१८	१६	१५	,,
मोहरी	४½	४	३¾	,,
कपड़े का अर्ज	१८	१६	१६	,,

चित्र सं० ८
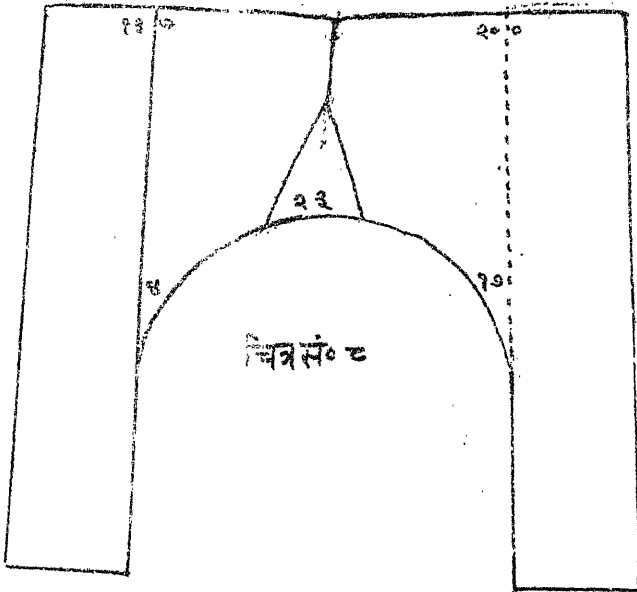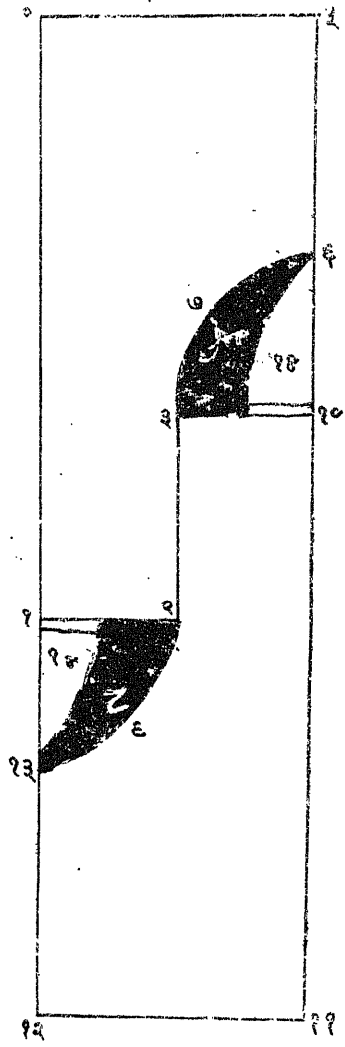
१६ गिरह अर्ज के कपड़े का घुटने पर सीने वाला पजामा काटने की रीति अर्थात्

ढ़ेंगली काट की दूसरी रीति (देखो चित्र नं० ९)

नोट—चित्र नं ९ में रेखा नं. १ कपड़े के अर्ज को दूहरा करके दिखाई गई है।

नाप—मानलो लात की लम्बाई १७ गिरह सीट की गोलाई १६ गिरह कपड़े का अर्ज १६ गिरह मोहरी ४ गिरह।

नं ० ज़ोरी से नं १ तक और नं ११ से १० तक लात की लम्बाई जमा २ गिरह बराबर १९ गिरह नं १ से २ तक और १० से ३ तक कपड़े अर्ज का चौथाई भाग बराबर ४ गिरह।

नं २ से ३ तक लात की लम्बाई की दूनी संख्या का पांचवां भाग बराबर ७ गिरह न ० से ५ तक और नं १२ से ११ तक दूहरा किया हुआ कपड़े का अर्ज ८ गिरह या सीट के नाप का आधा भाग बराबर ८ गिरह।

नं ५ से ६ तक और नं १२ से १३ तक आसन की लम्बाई सीट के नाप का छटा भाग जमा लात की लम्बाई का पांचवां भाग जमा नेफे के लिये एक गिरह कुल संख्या ७ गिरह। नं ३ से ४ तक रेखा न ६, ३ का आधा भाग।

नं ४ से ७ तक साधारण निमय सवा (१¼) ई० अर्थात् आधा गिरह। नं १३ से ८ तक रेखा नम्बर १३, २ का आधा भाग।

नं ८ से ९ तक साधारण नियम सवा (१$\frac{7}{4}$) ई० अर्थात् आधा गिरह फिर रेखा नं ६, ७, ३, २, १ और नं १३, ९, २, ३, १० के स्थान से काट कर पाजामा तैयार करें और नं १४ की जगह से म्यानी के लिये दो टुकड़े निकाल कर आसन के बीच में लगावें। जैसे चित्र नं ९ से प्रकट है और इस रीति में काले रंग का टुकड़ा एक अधिक है जिसे काट कर बाहर निकाल दें। सीने की रीति वही है जो चित्र नं ४ में वर्णन की गई है।

१६ गिरह अर्ज के कपड़े में ५ या ७ गिरह मोहरी वाला पाजामा काटने की रीति (देखो चित्र नं० १०)

नाप—मानलो लात की लम्बाई १७ गिरह कपड़े का अर्ज १६ गिरह सीट १६ गरह मोहरी ५ गिरह।

नोट—यदि गोडे पर सीन डालने की इच्छा हो तो कपड़े के अर्ज को रेखा नं ५, १० के स्थान से दूहरा करके फिर पाजामा काटना शुरू करें। यदि घुटने पर सीन डालने की इच्छा न हो तो नं ०, १ के स्थान से कपड़े के अर्ज को दूहरा करके फिर पाजामा काटना शुरू करें।

नं ० से नं १ तक लात की लम्बाई जमा नेफे और मोहरी के लिये २ गिरह कुल १९ गिरह। नं ० से ५ तक सीट की गोलाई या कपड़े के अर्ज का आधा भाग बराबर ८ गिरह।

नं १ से २ तक मोहरी की चौड़ाई नियमानुसार ५ गिरह।
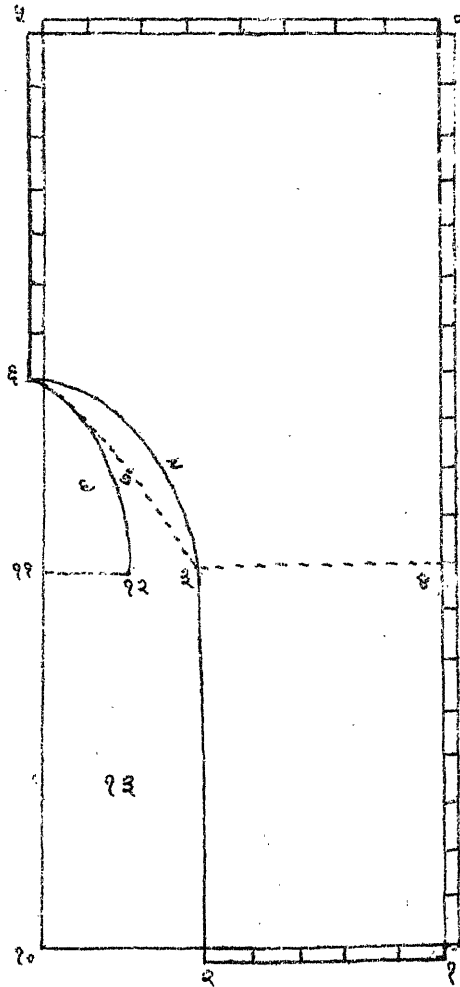
चित्र सं० १०

समालोचना

देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी एम० ए०

मैंने महाशय देवी चन्द जी की बनाई हुई "हमदर्द दर्ज़ियां" और "गुलाफ छत्री" नाम की दो पुस्तकें देखीं। जहां तक मुझे मालूम है, ये दर्ज़ी-कला पर अपने ढंग की पहली पुस्तकें हैं। पहले ऐसी वैज्ञानिक रीति से लिखी हुई अपटूडेट अर्थात आजतक इस कला पर मेरे दृष्टिगोचर नहीं हुई। इनकी भाषा बड़ी सरल है और प्रत्येक बात को चित्रों द्वारा भलि भांति समझाया गया है कि जिनकी सहायता से अनपढ़ दर्ज़ी भी भलि भांति समझ सकते हैं। मेरी सम्मति में यह पुस्तकें प्रत्येक कटर के पास और प्रत्येक ऐसे स्कूल में अवश्य होनी चाहियें जहां दर्ज़ी का काम सिखाया जाता है। उर्दू भाषा में दर्ज़ी-कला पर सच मुच एक अमूल्य उन्नति है।

नं २ से ३ तक लात की लम्बाई दूनी संख्या का पांचवां भाग जमा १ गिरह बराबर ८ गिरह।

नं ५ से ६ तक सीट का छटा भाग जमा लात की लम्बाई को पांचवां भाग जमा नेफे के लिये १ गिरह कुल संख्या ७ गिरह।

नं ३ से ७ तक रेखा नं ६, ३ का आधा भाग

नं ७ से ८ तक साधारण नियम $1\frac{1}{4}$ ई०

फिर नं २, ३, ८, ६ के स्थान से काट कर पाजामा तैयार करें जैसे चित्र नं १० से प्रकट है।

म्यानी काटने की रीति चित्र नं १०—नं ६ से ११ तक सीट का चौथा भाग जमा आधा गिरह बराबर साड़ेचार गिरह।

नं ११ से १२ तक रेखा नं ६, ११ का चौथा भाग बराबर ढाई ई० करीब करीब १ गिरह

फिर नं ११, १२, ६ के स्थान से काट कर म्यानी तैयार करें जैसे टुकड़ा नं ९ प्रकट करता है।

नोट—इस रीति में नं १३ के स्थान का टुकड़ा अधिक है जिस जगह चाहें खर्च करें और सीने की रीति वही है जो चित्र नं ४ में वर्णन कर चुके हैं।

इस पाजामे को कपड़ा लगाने की रीति

नियम—लात की लम्बाई में २ गिरह जोड़ कर फिर दो के साथ गुणा करके जो उत्तर मिले उतना कपड़ा लगेगा।

उदाहरण—मानलो लात की लम्बाई १८ गिरह (१८+२)×२=२ गज ८ गिरह कपड़ा लगेगा आगे इसी तरह

नोट—यह नियम तब काम में लावें जब कपड़े क अर्ज सीट के नाप के बराबर और मोहरी का नाप चौथाई ग अधिक रखने की इच्छा हो।

उरेब पाजामा काटने की रीति (चित्र नं ११)

नाप—मानलो लात की लम्बाई १७ गिरह मोहरी ३ गिर सीट १६ गिरह।

नोट—नं ० से १ तक और नं० ७ से ९ तक यह एक कपड़े का थैला है जिसके विषय में हम आगे बर्णन करेंगे।

नं ० से १ तक लात की लम्बाई का नाप जमा ३ गिरह बराबर २० गिरह नं ९ से सात ७ तक रेखा नं ०, १ के बराबर २० गिरह।

नं १ से २ तक और ७ से ५ तक मोहरी का नाप ३ गिरह

नं ० से ५ तक और ६ से २ तक सीट का आधा भाग जमा १ गिरह बराबर ९ गिरह। नं २ से ३ तक और ५ से ६ तक लात की लम्बाई की दूनी संख्या का पांचवां भाग बराबर ७ गिरह। नं ४ से ३ तक और ८ से ६ तक मोहरी के नाप के बराबर ३ गिरह,

नं ५ से ६ तक और नं २ से ३ तक आसन की लम्बाई सीट के नाप का छटा भाग जमा लात की लम्बाई का पांचवां भाग जमा नेफे के लिये एक गिरह कुल संख्या ७ गिरह नं

चित्र सं० ११

चित्र सं० १४

चित्र सं० १५
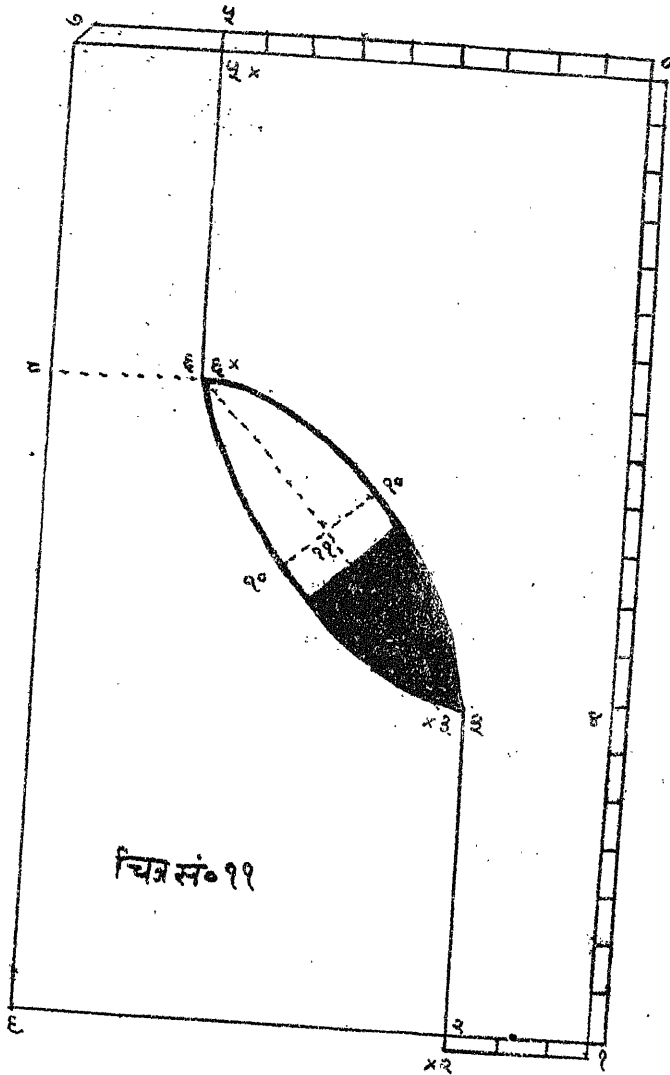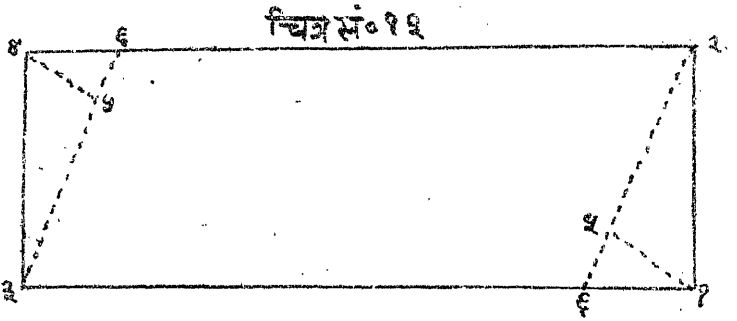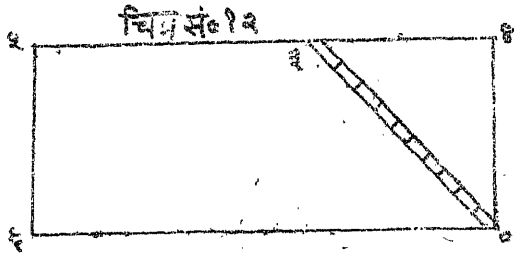
३ से ११ तक रेख। ६ व ३ का आधा भाग, नं ११ से १० तक सीट का सोलहवां भाग बराबर एक गिरह। फिर नं २, ३, १०, ६, ५ के स्थान से काट कर पाजामा तैयार करें और नं० ११ की जगह का टुकड़ा आसन के बीच में लगावें। जैसे चित्र नं ४ से प्रकट है, इस रीति में काले रंग की जगह का टुकड़ा अधिक है जिसे काट कर बाहर निकाल दें।

उरेब पाजामें के थैला बनाने की रीति

पहिले कपड़े के अर्ज को दूहरा करके अर्ज के दोनों ओर बखिया करके सीन डाल दें।

देखो चित्र नं १२

नं ५ से नं ४ तक और नं ५ से ६ तक कपड़े का दूहरा किया हुआ अर्ज है।

नं ० से नं ३ तक पाजामे के एक लात के ऊपर के घेरे और मोहरी की चौथाई के बराबर १२ गिरह।

फिर विन्दु नं ३ के स्थान से कपड़े के दोनों किनारों को इकट्ठा करके सीन डाल कर उरेब पाजामें का थैला लगावें। जैसे चित्र नं १२ से प्रकट है।

फिर नं १, २, ३, ४ की जगह से चित्र नं १३ के थैले को काट कर सीनों की जगह का बिन्दु नं० ५ दोनों ओरों से अर्थात् बिन्दु नं ६ से बराबर दूरी पर नियत करके पाजामे को काटना आरम्भ (शुरु) करें। जैसा कि हम चित्र नं ११ में वर्णन कर चुके हैं।

नई ईजाद

उरेब पाजामे को कपड़ा लगाने की रीति

उरेब पजामा भारतवर्ष का एक आदर्णीय वस्त्र संसार के अनेक बुद्धिमान देशों में माना गया है परन्तु शोक ! कि इस का कपड़ा मालूम करने की काई शुद्ध रीति अनाड़ी दर्जी तो क्या बल्कि अच्छे अच्छे कारीगर भी आज तक नहीं जानते, इस पर दर्जियों की अपनी अपनी मन घड़न्त अनेक सम्मतियां हैं जिनके मानने में प्रतिकूलता है। यदि सच पूछो तो कोई शुद्ध रीति इस प्रश्न के हल करने पर दर्जियों के बीच संसार के अन्दर आज तक प्रचारित नहीं किया गया जिस पर तमाम कटर एक मत रहें और परिणाम ठीक प्राप्त कर सकें और नियम गणित द्वारा शुद्ध हो इसलिये हम इस नियम को आज साफ २ वर्णन करते हैं। जिस से दर्जी दूकानदारों और विद्यार्थियों के लिये इस कष्ट के बदले आगे के लिये सदा सुगमता रहे। यद्यपि यह पुस्तक दर्जी-कला की छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है तो भी यह नियम दर्जी दुकानदारों को यहां से याद करलेना चाहिये।

नियम—पाजामे की एक लात के ऊपर से घेरे की चौड़ाई को नाप कर उस में मोहरी की चौड़ाई को जोड़ कर फिर पाजामे की पूरी लम्बाई के साथ गुणा करके फिर दो के साथ गुणा करके फिर कपड़े के अर्ज पर भाग देकर जो उत्तर मिले उतना कपड़ा लगेगा।

उदाहरण—मानलो पाजामे की पूरी लम्बाई २० गिरह

समालोचना

सरदार गुरुदत्त सिंह प्रोफेसर नैशनल कालेज लाहौर-

मुझे आपकी पुस्तक "हमदर्द दर्ज़ियां" और "गुलाफ कत्री" देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। जब से मैंने वैज्ञानिक रीति पर कपड़े की कटाई की विद्या का अवलोकन किया था, तब से मेरे चित्त में अभिलाषा थी कि देश के भाईयों की सेवा हिंदी भाषा में लेख रीति से करूं। परन्तु आपने परमोच्च रीति पर यह कार्य कर के मेरी इच्छा पूरी की है। मैं इस कारण से और भी प्रसन्न हुआ हूँ कि आप की पुस्तकें सरल और सहज उरदू भाषा में हैं। उन से थोड़ा पढ़ा हुआ मनुष्य भी लाभ उठा सकता है। मैं आपकी पुस्तक का नाम "हिन्दुस्तान का दर्ज़ी" देखने का बहुत अभिलाषी हूँ। आशा है कि यह पुस्तकें यदि हिन्दी या गुरुमुखी भाशा में हूँ तो स्त्री शिक्षा के लिये परमोपयोगी सिद्ध हों, क्योंकि मैं दृढ़ता के साथ कह सकता हूं कि इससे पूर्व इन से अच्छी तो क्या इन से आधि भी लाभदायक पुस्तकें मेरे दृष्टिगोचर नहीं हुईं-

चित्र सं० १४
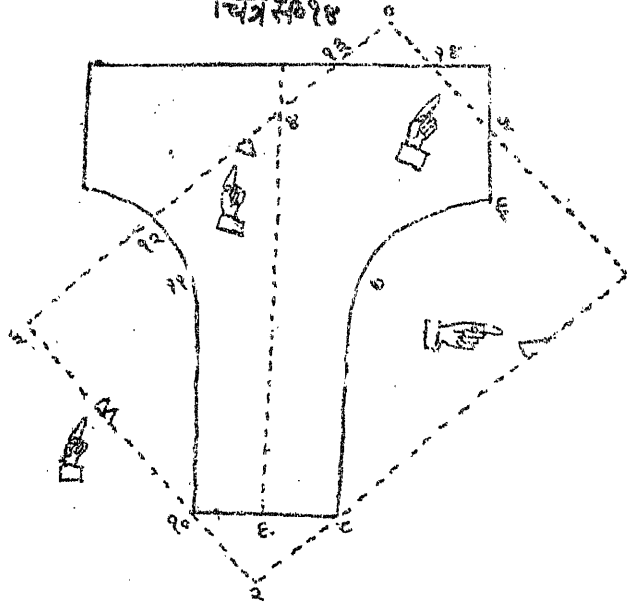
और ऊपर से पाजामे की एक लात के घेरे की चौड़ाई ९ गिरह मोहरी तीन गिरह कपड़ेका अर्ज १० गिरह [{ (९+३) × २० } ×२]÷१०=४८ गिरह कपड़ा लगेगा आगे इसी प्रकारः—

दूसरा उदाहरणः—मानलो पाजामे की पूरी लम्बाई २० गिरह मोहरी की चौड़ाई ३ गिरह पाजामे की एक लात के ऊपर से घेरे की चौड़ाई ८ गिरह कपड़े का अर्ज १४ गिरह।

[{ (८+३) × २ } ×२]÷१४=३४ ३/७ गिरह कपड़ा लगेगा आगे इसी प्रकारः—

नोट—इस नियम के विपरीत गणित द्वारा कुछ नहीं परन्तु कपड़े के अर्ज का सीमा से अधिक व कम होने के कारण बहुत सी शंकाएं उत्पन्न होती हैं। इस कारण जब कपड़े का अर्ज सीट के नाप से ⅔ भाग अर्थात् दो तिहाई भाग से लेकर बराबर तक होवे तब यह नियम विद्यार्थी खुशी से काम में लावे साधारणतः इस कपड़े के अर्ज बहुत मिलते हैं। जब कभी कपड़े का अर्ज सीट के नाप से अधिक हो तो विद्यार्थी को उरेब पाजामा काटने के लिये पतंग काट का नियम काम में लाना चाहिये जैसे चित्र नं १४ से प्रकट है। यद्यपि पतंगकाट की रीति में उरेब पाजामे को कपड़ा कुछ अधिक लगता है परन्तु पाजामा अपने उरेब पन में ठीक शुद्ध रहता है।

पतंग काट का पाजामा काटने की रीति (चित्र नं १४)

वास्तव में यह नाप अशुद्ध है अर्थात् पतंग काट का

पाजामा काटने की कोई रीति नहीं है, केवल पतंग के रूप में कपड़ा रख कर पाजामे को कपड़ा लगाने की रीति का नाम पतंगकाट है। वास्तव में पाजामा काटने की रीति वही है जो हम चित्र नं ११ मे वर्णन कर चुके हैं। इस जगह केवल कपड़ा लगाने की रीति बताई जातीहै कि जिस को दर्जी पतंग-काट का पाजामो काटने की रीति कहा करते हैं।

नं ० से १ तक और २ से ३ तक कपड़े का अर्ज १६ गिरह

नं ० से ३ तक और १ से २ तक कपड़े की दूहरी की हुई लम्बाई २० गिरह फिर रेखा नं १, २ और नं ०, ३ को इकट्ठा करके एक शिकनदार (मोड़वाली) रेखा नं २, ४ के ऊपर पाजामे की लात के कागज को रख कर कपड़े को नं ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ और नं १३, १४ के स्थान से काट कर शेष टुकड़ों के तीन कोने चिन्ह एक के साथ एक को और दो के साथ दो को लगावें जिस जगह चित्र नं १४ में उंगलियों के इशारे प्रकट करते हैं।

डोगरा पाजामा काटने की रीति (देखो चित्र नं० १४/१)

नाप—मान लो लात की लम्बाई ४० ई० मोहरी १३ ई० कपड़े का अर्ज एक गज।

नोट—इस पाजामे में लात के आगे का भाग दूहरा होता है नं ० से १ तक लम्बाई में सीधी रेखा कपड़े के अर्ज को दो दफा दूहरा करके दिखाई गई है।

नं ० से १ तक लात की लम्बाई जमा ५ ई० बराबर ४५ ई० पाजामे की लम्बाई अर्थात् २० गिरह।

चित्र सं० $\frac{१४}{१}$
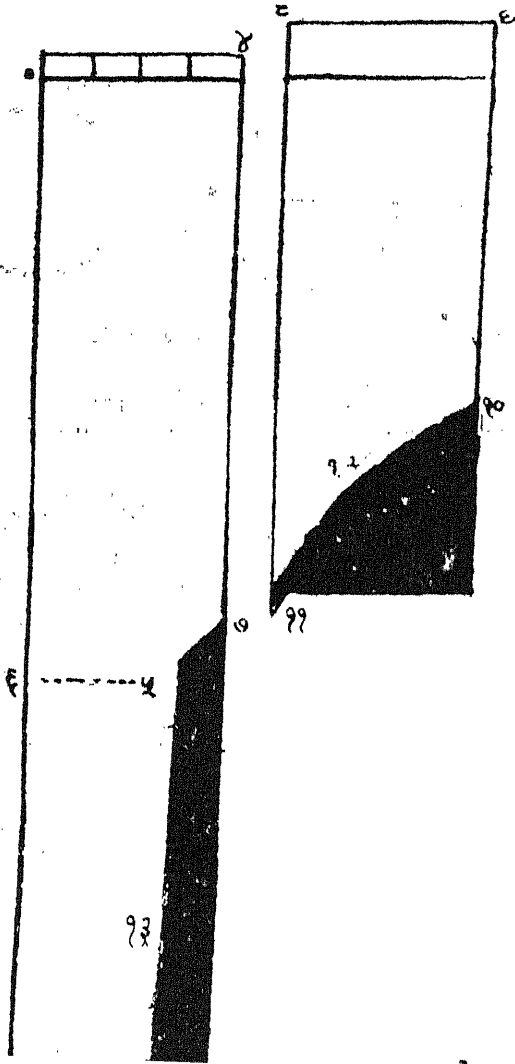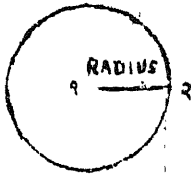
चित्र सं० १७
RADIUS
१
२
चित्र सं० १६
DIAMETER
१
२
चित्र सं० १५
CIRCLE
चित्र सं० १९
२
१
३
ISOSCELES TRIANGLE
चित्र सं० १८
१
ANGLE
२
३
चित्र सं० २०
DIAGONAL LINE
१
२
चित्र सं० २१
PARRALEL LINES
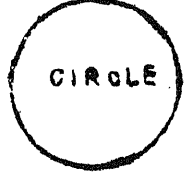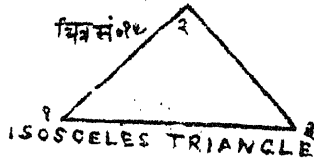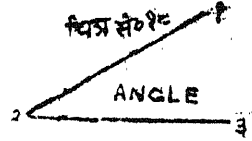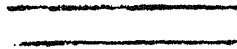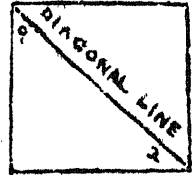
नं १ से २ तक मोहरी की गोलाई पड़ी के नाप का आधा भाग नफी आधा ई० बराबर ६ ई०

नं ० से ६ तक घुटने की गहराई के नाप के बराबर जमा घुटने के हरकत के लिए ३ ई० बराबर २७ ई० अर्थात् १२ गिरह।

नं ६ से ५ तक पड़ी के नाप के बराबर नफी चौथाई ई० बराबर सवा छः (६¼) ई०

नं ४ से ७ तक रेखा नं ०, ६ के बराबर नफी दो ई० बराबर २५ ई०

फिर नं २, ५, ७ के स्थान से काट कर आगे का भाग तैयार करें।

नोट:—यदि इस पाजामे की लम्बाई सवा गज हो तो केवल इतने भाग को कपड़ा ढ़ाई (२½) गज लगेगा जब कि कपड़े का अर्ज और सीट की गोलाई का नाप एक गज हो।

आसन काटने की रीति

नोटः—रेखा नं ३, १० कपड़े को दो दफा दूहरा करके पुस्तक में दिखाई गई है।

यह भाग कपड़े के पाजामे में अन्य पाजामों की भान्ति होता है।

नं ८ से ११ तक रेखा नं ४, ७ के बराबर जमा दो ई० नेफे के लिए बराबर २७ ई०

६ से १० तक आसन की लम्बाई सीट का छटा ($\frac{1}{6}$) भ
जमा लात की लम्बाई का पांचवां भाग जमा नेफे के लिए
ई० कुल संख्या १६ ई०

फिर नं १२, १३ के स्थान से काले रंग का अधिक टुक
काट कर पाजामे को तैयार करें । यदि पाछामे का अधि
घेरा गाहक पसन्द करता हो तो न ६, १२ के स्थान के काले
के टुकड़े में से म्यानी काट कर आसन के बीच डाल दें जै
कि हम पहिले पाजामे में बता चुके हैं ।

नोट—सिलाई के समय रेखा नं ४, ७ के साथ रेखा
०, ८, ११ को लगावें ।

डोगरा पाजामे को कपड़ा लगाने की रीति

लम्बाई को ढ़ाई ($2\frac{1}{2}$) के साथ गुथा दे कर फिर
गिरह जोड कर जो उत्तर मिले उतना कपड़ा लगेगा ।

उदाहरण—मान लो पाजामे की लम्बाई २० गिरह
{ (२०× $2\frac{1}{2}$) + } ÷ १६ =बराबर सवा तीन ($3\frac{1}{4}$)
कपड़ा लगेगा ।

नोट—यह नियम तब काम में लावें जब कपड़े का अ
सीट की गोलाई के बराबर हो ।

देवीचन्द टेलरिंग अक्सपर्ट होशियारपुर (पंजाब)

१६ गिरह अर्ज का कपड़ा पाजामे को इतना लगेगा

नम्बर शुमार	लम्बाई	सीट	मोहरी	नियम लम्बाई गुणा भाग	इतना कपड़ा लगेगा		देखो चित्र नम्बर
	गिरह	गिरह	गिरह	गिरह	ग.	गि.	
१	२१	२०	४½	(२१ × २) ÷ १६	२	१०	५
२	२०	१९	४½	(२० × २) ÷ १६	२	८	५
३	१९	१८	४	(१९ × २) ÷ १६	२	६	५
४	१८	१८	४	(१८ × २) ÷ १६	२	४	५
५	१७	१८	४	(१७ × २) ÷ १६	२	२	५
६	१६	१७	४	(१६ × २) ÷ १६	२	०	५
७	२१	१६	४	(२१ × २) − ७ ÷ १६	२	३	७, ६
८	२०	१६	४	(२० × २) − ७ ÷ १६	२	१	७, ९
९	१९	१६	४	(१९ × २) − ७ ÷ १६	१	१५	७, ८
१०	१८	१५	४	(१८ × २) − ७ ÷ १६	१	१३	७, ८
११	१७	१५	४	(१७ × २) − ७ ÷ १६	१	११	७, ९
१२	१६	१४	३½	(१६ × २) − ६ ÷ १६	१	१०	७, ९
१३	१५	१३	३½	(१५ × २) − ६ ÷ १६	१	८	७, ६
१४	१४	१२	३½	(१४ × २) − ५ ÷ १६	१	७	७, ६
१५	१३	११	३	(१३ × २) − ५ ÷ १६	१	५	५ य ७
१६	१२	१०	३	(१२ + ७) ÷ १६	१	३	५
१७	११	९	३	(११ + ६) ÷ १६	१	१	५

१४ गिरह अर्ज़ का कपड़ा पाजामे को इतना लगेगा

नम्बर शुमार	लम्बाई गिरह	सीट गिरह	मोहरी गिरह	नियम लम्बाई गुणा भाग गिरह	इतना कपड़ा लगेगा ग.	गि.	दे… चि… नम्ब…
१८	२१	१९	४	(२१ × २) ÷ १६	२	१०	३
१९	२०	१९	४	(२० × २) ÷ १६	२	८	३
२०	१९	१८	४	(१९ × २) ÷ १६	२	६	३
२१	१८	१८	४	(१८ × २) ÷ १६	२	४	३
२२	२१	१६	४	(२१ × २) ÷ १६	२	१०	५
२३	२०	१६	४	(२० × २) ÷ १६	२	८	५
२४	१९	१६	४	(१९ × २) ÷ १६	२	६	५
२५	१८	१५	३१/२	(१८ × २) ÷ १६	२	४	५
२६	१७	१५	३१/२	(१७ × २) ÷ १६	२	२	७,
२७	१६	१४	३१/२	(१६ × २) − ६ ÷ १६	१	१०	७,९
२८	१५	१३	३१/२	(१५ × २) − ६ ÷ १६	१	८	७,
२९	१४	१२	३	(१४ × २) − ५ ÷ १६	१	७	७,८
३०	१३	११	३	(१३ × २) − ५ ÷ १६	१	५	७,८
३१	१२	१०	३	(१२ × २) − ४ ÷ १६	१	४	७,८
३२	११	९	३	(११ × २) − ४ ÷ १६	१	२	७,८

१२ गिरह अर्ज़ का कपड़ा पाजामे को इतना लगेगा

नम्बर शुमार	लम्बाई गिरह	सीट गिरह	मोहरी गिरह	नियम लम्बाई गुणा भाग गिरह	इतना कपड़ा लगेगा ग.	गि	देखो चित्र नम्बर
३३	२१	२०	४	(२१×२ + १२) ÷ १६	२	१२	५
३४	२०	१९	४	(२०×२ + ११) ÷ १६	२	११	५
३५	१९	१९	४	(१९×२ + १०) ÷ १६	२	१०	५
३६	१८	१८	४	(१८×२ + ९) ÷ १६	२	९	५
३७	१७	१८	४	(१७×२ + ८) ÷ १६	२	८	५
३८	१६	१७	४	(१६×२ + ४) ÷ १६	२	४	५
३९	२१	१६	४	(२१×२) ÷ १६	२	१०	५
४०	२०	१६	४	(२०×२) ÷ १६	२	८	५
४१	१९	१६	४	(१९×२) ÷ १६	२	६	५
४२	१८	१५	४	(१८×२) ÷ १६	२	४	५
४३	१७	१५	४	(१७×२) ÷ १६	२	२	५
४४	१६	१४	३½	(१६×२) ÷ १६	२	०	५
४५	१५	१३	३½	(१५×२) ÷ १६	१	१४	५
४६	१४	१२	३½	१४×२) ÷ १६	१	१२	५
४७	१३	११	३	(१३×२)−५ ÷ १६	१	५	७
४८	१२	१०	३	(१२×२)−४ ÷ १६	१	४	७
४९	११	९	३	(११×२)−४ ÷ १६	१	२	७

१० गिरह अर्ज का कपड़ा पाजामे को इतना लगेगा

नम्बर शुमार	लम्बाई गिरह	सीट गिरह	मोहरी गिरह	नियम लम्बाई गुणा भाग गिरह		इतना कपड़ा लगेगा ग.गि.		देखो चित्र नम्बर
५०	२१	२०	४	(२१×२+१३×२	÷१६	४	४	५
५१	२०	१९	४	(२०×२+१२×२)	÷१६	४	०	५
५२	१९	१९	४	(१९×२+११×२)	÷१६	३	१२	५
५३	१८	१८	४	(१८×२+१०×२)	÷१६	३	८	५
५४	१७	१८	४	(१७×२+ ९ ×२)	÷१६	३	४	५
५५	१६	१७	४	(१६×२+ ९ ×२)	÷१६	३	२	५
५६	२१	१६	४	(२१×२+१४)	÷१६	३	८	५
५७	२०	१६	४	(२०×२+१३)	÷१६	३	५	५
५८	१९	१६	४	(१९×२+१२)	÷१६	३	२	५
५९	१८	१५	४	(१८×२+११)	÷१६	२	१५	५
६०	१७	१५	४	(१७×२+१०)	÷१६	२	१२	५
६१	१६	१४	३½	(१६×२+१०)	÷१६	२	१०	५
६२	१५	१३	३½	(१५×२+ ९)	÷१६	२	७	५
६३	१४	१२	३½	(१४×२+ ७)	÷१६	२	३	५
६४	१३	११	३	(१३×२)	÷१६	१	१०	५
६५	१२	१०	३	(१२×२)	÷१६	१	८	५
६६	११	९	३	(११×२)	÷१६	१	६	५

चित्र सं० २४

चित्र सं. २२

कुछ ज्यूमेट्रीकल शक्लें और उनका प्रयोग

देखो चित्र नं १५ से नं २१ तक

चन्द नुकते (कुछ मुख्य बातें) हाई क्लास (   ) के दर्जी विद्यार्थियों के लिये

आओ हम यह मालूम करें कि शरीर पर पाजामा कहां है और कितना है और शरीर की अनुकूलता कहां तक करता है देखो चित्र नं २२ यह मनुष्य के शरीर के नीचे का भाग है जिसके ऊपर से हमें पाजामे को प्राप्त करना है। यदि इस शरीर की फ्रेम (Frame) के अन्दर रक्खें जैसे चित्र नं २३ से प्रकट होता है तो विद्यार्थी को मालूम होगा कि शरीर की टांगों का भाग मैथे मैटिकिली (   ) अर्थात् गणित द्वारा शक्ल रेक्टेङ्गल (Rectangle) अर्थात् आयत में है परन्तु प्रकृति ने मनुष्य का शरीर दायें बायें दो भागों में बांटा है। इस लिए हम दोनों टांगों के बीच चित्र नं २३ में रेखा नं ७, ६ खींच कर शरीर को दो भागों में पूरा पूरा बांटते हैं जिससे विद्यार्थी को पाजामें का आसन मालूम करने के लिये आसानी रहे जैसे चित्र नं २४ में नं ५, ६ के बीच इञ्चटेप आसन की लम्बाई को प्रकट करता है :

दरम्याना (मध्यम) शरीर का नाप

मान लो सीट ३६ ई० लात की पूरी लम्बाई ३८ ई० घुटने तक लात की लम्बाई २४ ई० गोडे की गोलाई १४ ई० एड़ी की गोलाई १२ ई०

देखो चित्र नं २३,२५

चित्र नं २३ में बिन्दु नं ० से १ तक सीट की गहराई ७ ई० जिसके बराबर चित्र नं २५ पाजामे में बिन्दु नं ७ से २ तक ७ ई० चित्र नं २३ में बिन्दु नं ० से २ तक लात की लम्बाई २४ ई० जिसके बराबर चित्र नं २५ पाजामे में बिन्दु नं ० से २ तक २४ ई० चित्र नं २३ में नं ० से ५ तक और नं १ से ६ तक सीट के आगे की ओर से ८ ई० और पीछे की ओर से १० ई० परन्तु पाजामे के पेश और पीठ के भागों में कोई अन्तर नहीं रक्खा जाता इस लिये चित्र नं २५ में नं ० से ५ तक और नं १ से ६ तक शरीर के पिछले भाग के बराबर १० ई० ।

चित्र नं २३ में नं २ से ३ तक जो संख्या है वह एक अधिक और शरीर की प्राकृत बनावट से बाहर है इस कारण इस संख्या को पहिले निकाल कर फिर पाजामे के काटने के नियम हमें नियत करना चाहिये जिससे पाजामे की बनावट शरीर की टांगों की पोजीशन (   ) के पैरेलल (   ) अर्थात् सामानान्तर साथ साथ रहे । परन्तु शोक है कि हमारे देश में ऐसी बातों पर विचार करना तो दूर रहा सुनने तक के लिए भी तैयार नहीं । इस लिए लाचारी के पीछे वही नियम लिख गए हैं जिनको हमारे दर्जी भाई अपनी रोज की प्रेक्टिस (   ) में प्रयोग करते हैं, इस लिए चित्र नं २५ में नं २ से ११ तक घुटने की गोलाई का आधा भाग बराबर ७ ई०, चित्र नं २४ में ५ से ६ तक आसन की लम्बाई १० ई० जिसके बराबर चित्र नं २५ में नं ५ से ७ तक १० ई०
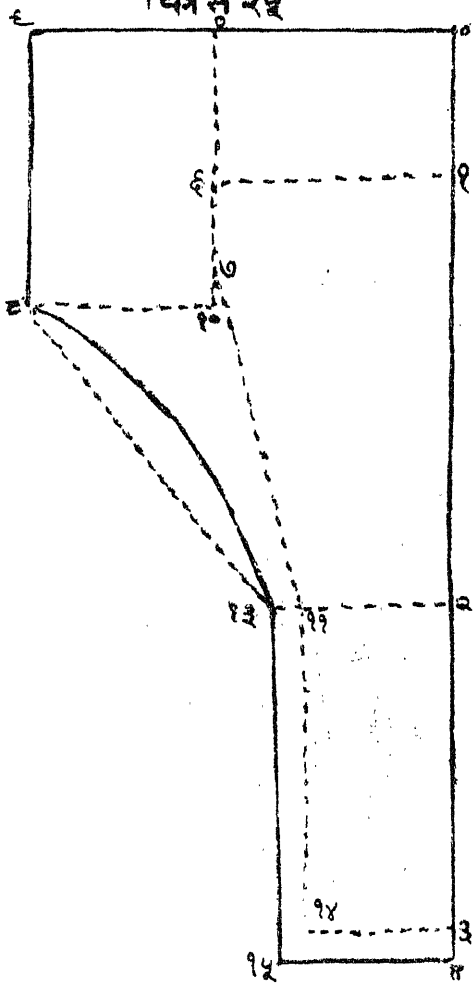
चित्र सं० २५

चित्र सं० २६
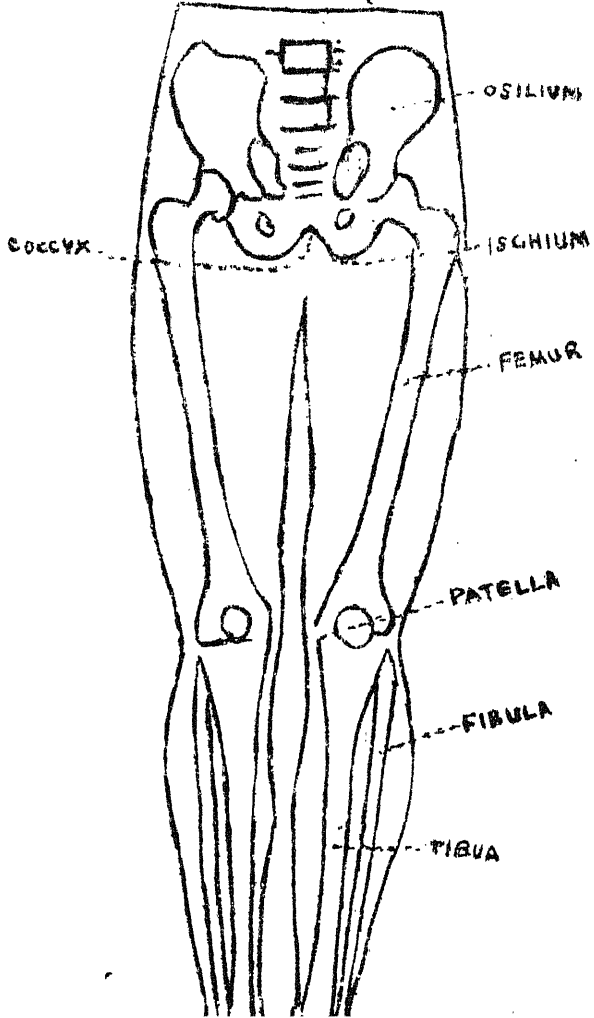
यदि अब हम चित्र नं २५ में बिन्दु नं ११, ७, ५ के स्थान से काट दें तो शरीर के नाप के अनुसार पाजामा तैयार हो सकता है परन्तु हमारे सामने कई शंकाएँ यह हैं कि शरीर के नीचे का भाग कई स्थानों पर अनेक प्रकार से हरकत करता है इनके लिए पाजामे में कहां से लेकर किस स्थान तक कौन से रूप में कितना कितना एरिया (Area) अर्थात् क्षेत्र फल की संख्या को जोड़ना चाहिये ?

उत्तर

देखो चित्र नं २६—यह शरीर के भीतर की हड्डियां हैं जो मनुष्य के चलने फिरने बैठने उठने के समय अनेक प्रकार हिलती हैं जैसे मनुष्य जब किसी ऊंचे स्थान पर पैर रखता है, तो भीतर के ओर से सीट का जोड़ घूमता है, और सीट का भाग नं ३, ४ के स्थान से अधिक बढ़ता है, जैसे चित्र नं २७ में नं ३, ४ तक सीट की गोलाई प्रकट है जिस समय मनुष्य आगे को चलता है तो टांगों के बीच डाइगोनली (Diagonally) डाइरेकशन अर्थात् तिरछी सतह में दूरी अधिक बढ़ती है। जैसे चित्र नं २८ में नं ४ से ५ तक और नं ८ से ९ तक टांगों की हरकतें करती हैं।

जब मनुष्य बैठता है तो एंगल) नं २, ३, ४ के स्थान से सीट का भाग अधिक बढ़ता है और घुटने का जोड़ एंगल नं ५, ६, ७ के स्थान से अधिक फैलता है जैसे चित्र नं २९ से प्रकट है। इसलिए सीट और घुटने की इन तमाम

हरकतों के लिये नं २५ के पाजामे में बिन्दु नं ७ से १० तक सीट के नाप का अठरहवां भाग बराबर २ ई० । और नं १०से ८ तक सीट का चौथा भाग बराबर ८ ई० संख्या दरम्यान पाजामे में जोड़नी चाहिये । जिससे शरीर की सीट और घुठने के स्थान से पाजामे के भीतर अपनी तमाम हरकतें कर सके।

दूसरी शंका यह है-

कि गोडे का जोड़ हरकत करता है फीमर (Femur) हड्डी के साथ टिबिया (Tibia) और फिबूला हड्डियां घूमती हैं और पैटिल्ला (Patella) हड्डी के स्थान से गोडे का नाप लम्बाई और गोलाई में अधिक बढ़ता है, जैसे चित्र नं २७ व २८ में ऐङ्गल नं ५, ६, ७ प्रकट करता है अब इस अधिकता के लिये पाजामे में क्या करना चाहिए ?

उत्तरः—

यदि पाजामे की मोहरी का नाप घुटने को गोलाई से चौथा भाग अधिक रहे तो तो पाजामे में घुटने के स्थान पर कोई कपड़े की संख्या जोड़ने की आवश्यकता नहीं । क्योंकि फिर घुटने का जोड़ पाजामे की मोहरी के सरकुल ( ) अर्थात् में भली भांति हरकत कर सकता है ।

यदि पाजामे की मोहरी का नाप घुटने की गोलाई से कम है तो चित्र नं २५ में नं ११ से १३ तक घुटने की गोलाई का छठा भाग लात की लम्बाई और चोड़ाई में जोड़कर फिर पाजामे को काटना चाहिये । जिससे पैटिल्ला (Patilla)

चित्र सं० २९

चित्र सं० २८

चित्र सं० ३०

चित्र सं० ३०

चित्र सं० ३१
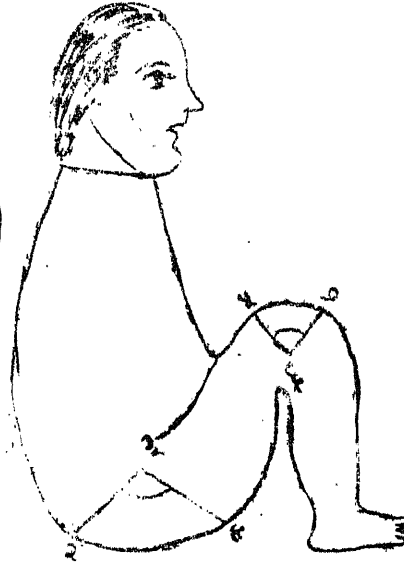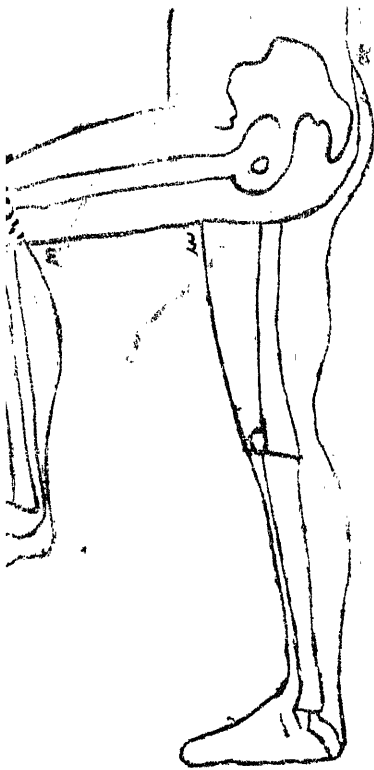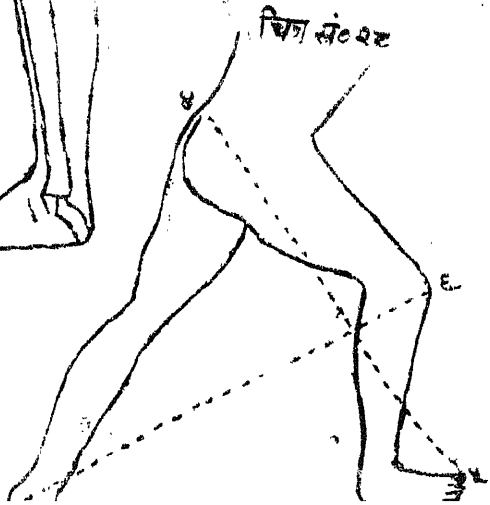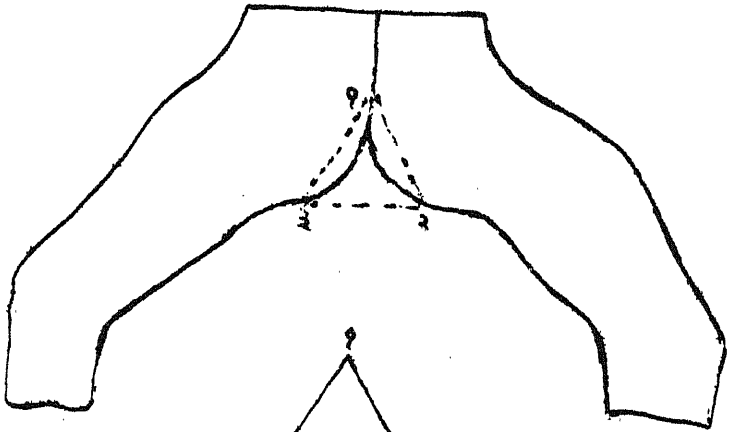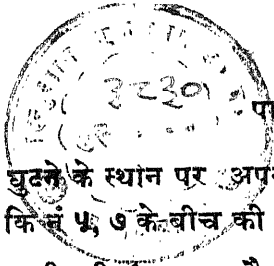
हड्डी घुटने के स्थान पर अपनी हरकत सुगमता से कर सके जैसे कि नं ५, ७ के बीच की दूरी चित्र नं २७, २९ में प्रकट है

तीसरी शंका यह है (देखो चित्र नं ३०)

जब मनुष्य बैठता है तो उसके पीछे की ओर नं १ के स्थान से कौकसिक्स (Coccyx) हड्डी अपनी पहली ही जगह पर रहती है परन्तु नीचे से घुटने और इशीयम हड्डियां नं २, ३ की ओर को अधिक खुलती हैं तो इनके लिये पाजामे में क्या करना चाहिये ?

उत्तरः—

यदि हम चित्र नं ३० में कोकसिक्स (Coccyx) हड्डी अर्थात् बिन्दु नं १ को नं २, ३ के साथ मिलादें जैसे बिन्दु वाली रेखायें प्रकट करती हैं । तो हमें गणित द्वारा दोनों टांगों के बीच से चित्र न ३१ जैसी एक आईस्सोलिस (   ) ट्राई ऐङ्गल अर्थात् त्रभुज मिलती है । जिसको कि दर्जी अपने शब्दों में म्यानी कहा करते हैं इसे पाजामे के बीच में आसन के नीचे डाल देना चाहिये जिससे मनुष्य के बैठने के समय शरीर में इशीयम (Ischtum) हड्डियां अपनी हरकतें सुगमता से कर सकें ।

विद्वानों की सम्मतिया—

देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी एम० ए० लाहौर—

मैंने महाशय देवीचन्द जी की बनाई हुई "हमदर्द दर्जियां" और "गुलाफ़ छत्री" नाम की दो पुस्तकें देखीं। जहां तक मुझे मालूम है, ये दर्ज़ी-कला पर अपने ढंग की पहली पुस्तकें हैं। पहले ऐसी वैज्ञानिक रीति से लिखी हुई अपटूडेट अर्थात् आज तक इस कला पर मेरे दृष्टिगोचर नहीं हुई। इनकी भाषा बड़ी सरल है और प्रत्येक बात को चित्रों द्वारा भली भांति समझाया गया है कि जिनकी सहायता से अनपढ़ दर्ज़ी भी भली भांति समझ सकते हैं। मेरी सम्मति में यह पुस्तकें प्रत्येक कटर के पास और प्रत्येक ऐसे स्कूल में अवश्य होनी चाहिए जहां दर्ज़ी का काम सिखाया जाता है। उर्दू भाषा में दर्ज़ी-कला पर सचमुच एक असूल्य उन्नति है।

एडीटर साहब अखबार प्रताप, लाहौर—

दर्ज़ी-कला पर पांच नई पुस्तकें महाशय देवीचन्द बाहन ने भेजी हैं। इनके नाम "कमीज़, वास्कट, कुर्ता, सिलवार और पाजामा" हैं। इनका विषय इनके नाम से ही प्रकट है। लेखक ने इन वस्तुओं को सिलाई कटाई के नियम बहुत समझा कर लिखे हैं। चित्रों और खाकों के देने से पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है। दर्ज़ी विद्या से अपरिचित लड़के और लड़कियां इन कामों को गुरु के न होते हुए भी सीख सकती हैं। जहां तक हमें मालूम है, ऐसी अच्छी पुस्तकें आज तक नहीं बनीं। देश में शिल्प-कला की उन्नति के लिए ऐसी पुस्तकों का बनना अति प्रसन्नता का कारण है।

Printed by Pt. Mahabir Pershad,
at the Vidya Prakash Press, Changer Road, Lahore